जब हम अब्राहम, इसहाक और याकूब जैसे पितृपुरुषों के जीवन का अध्ययन करते हैं, तो उनकी वंशावली ध्यानपूर्वक आदम, नूह और शेम तक, और फिर उनकी अपनी पीढ़ी तक पहुँचाई गई है (उत्पत्ति 5; उत्पत्ति 10; उत्पत्ति 11)। यह स्पष्ट वंशावली दिखाती है कि वे परमेश्वर की वाचा के लोगों से जुड़े हुए थे।

परंतु अय्यूब अलग दिखाई देता है।

अय्यूब की पुस्तक किसी वंशावली से नहीं, बल्कि एक साधारण परिचय से शुरू होती है:

> “ऊज़ देश में एक व्यक्ति था, जिसका नाम अय्यूब था। वह व्यक्ति निर्दोष और सीधा था; वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।”
> अय्यूब *1:1 (ESV)*

अय्यूब ऊज़ नामक देश में रहता था, जो इस्राएल की सीमाओं के बाहर था — सम्भवतः उत्तरी अरब, सीरिया या एदोम के पास (विलापगीत 4:21)। उसका सटीक स्थान विवादास्पद है, पर एक बात निश्चित है — अय्यूब रक्त से इस्राएली नहीं था।

परमेश्वर की योजना में अय्यूब का महत्व

यह तथ्य कि अय्यूब, जो इस्राएली नहीं था, पवित्रशास्त्र में एक केंद्रीय स्थान रखता है, हमें परमेश्वर के स्वभाव के बारे में गहरी सच्चाई सिखाता है: उसकी कृपा किसी एक राष्ट्र या वंश तक सीमित नहीं है।

अय्यूब को "निर्दोष और सीधा" कहा गया है — इससे पता चलता है कि परमेश्वर के सामने धर्म केवल वंश से नहीं मिलता, बल्कि विश्वास और परमेश्वर के प्रति भय से प्राप्त होता है। यह सत्य पूरी बाइबल में बार-बार दिखाई देता है:

> रोमियों *2:11 (ESV):*
> "क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।"

> प्रेरितों के काम *10:34-35 (ESV):*
> "तब पतरस ने अपना मुंह खोलकर कहा, 'अब मैं वास्तव में समझ गया हूं कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, बल्कि हर जाति में जो उससे डरता है और जो धर्म करता है, वह उसे प्रिय है।'"

अय्यूब मूसा की व्यवस्था से पहले के समय में जीवित था, जैसे अब्राहम भी। दोनों ने दिखाया कि परमेश्वर का मनुष्य के साथ संबंध हमेशा विश्वास पर आधारित रहा है, न कि केवल रीति-रिवाजों या वंश पर।

> “अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया, और उसने इसे उसके लिये धर्म गिना।”
> उत्पत्ति *15:6 (ESV)*

अय्यूब का विश्वास भी उसकी सच्चाई और परमेश्वर के भय में प्रकट हुआ।

अन्य अन्यजाति लोग जिन्होंने परमेश्वर की कृपा पाई

अय्यूब अकेला नहीं था। बाइबल में कई अन्य गैर-इस्राएली व्यक्तियों का उल्लेख है जिन्होंने परमेश्वर की कृपा प्राप्त की:

- रूथ मोआबी स्त्री — उसने अपने लोगों को छोड़कर इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण किया और विश्वास के द्वारा मसीह की वंशावली में सम्मिलित हो गई (मत्ती 1:5)।
- नामान, सीरियाई सेनापति — एक अन्यजाति सैनिक जिसे परमेश्वर ने तब चंगा किया जब उसने स्वयं को नम्र किया (2 राजा 5)।
- कर्नेलियुस, रोमी सूबेदार — एक अन्यजाति व्यक्ति जिसकी प्रार्थनाएँ और दान परमेश्वर के सामने स्मरण के रूप में पहुँचे, और जिसके द्वारा पतरस ने जाना कि परमेश्वर हर उस व्यक्ति को स्वीकार करता है जो उससे डरता है (प्रेरितों के काम 10:1–4)।

ये उदाहरण दिखाते हैं कि परमेश्वर का आशीर्वाद सब जातियों तक फैला हुआ है। ये मसीह की ओर संकेत करते हैं, जो केवल इस्राएल ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को उद्धार देने आए (यूहन्ना 3:16; प्रकाशितवाक्य 7:9)।

हमारी स्थिति इस कहानी में

यह आज हमारे लिए क्या अर्थ रखता है ?
इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा पृष्ठभूमि — चाहे तुम एक मसीही परिवार में जन्मे हो, एक पास्टर के घर में, या अविश्वासी परिवार में — यह तय नहीं करता कि तुम्हें परमेश्वर की कृपा मिलेगी या नहीं।

> “क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम उद्धार पाए हो; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का वरदान है।”
> इफिसियों *2:8–9 (ESV)*

परमेश्वर तुम्हारे वंश या पृष्ठभूमि के बारे में नहीं पूछता; वह तुम्हारे विश्वास और आज्ञाकारिता को देखता है। पौलुस इस सत्य को इस प्रकार व्यक्त करता है:

> “न तो यहूदी है न यूनानी, न दास है न स्वतंत्र, न पुरुष है न स्त्री; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।”
> गलातियों *3:28 (ESV)*

निष्कर्ष

अय्यूब की कहानी हमें सिखाती है कि परमेश्वर सर्वोच्च, निष्पक्ष और न्यायी है। वह हर उस व्यक्ति को स्वीकार करता है जो उससे डरता है, चाहे उसकी जाति या वंश कुछ भी हो।

अय्यूब की तरह, हमें भी यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए:
“मैं किस परिवार से आता हूँ?”
बल्कि यह पूछना चाहिए:
“क्या मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ और बुराई से दूर रहता हूँ?”

यदि तुम्हारा उत्तर “हाँ” है, तो तुम भी मसीह के माध्यम से परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हो — जन्म से नहीं, बल्कि विश्वास से धर्मी ठहराए गए।

Share on:

WhatsApp

Print this post